‘पद्मजा शर्मा और प्रभा खेतान के साहित्य में नारी भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन’

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय

जयपुर (राजस्थान) के हिंदी सन्काय

के अन्तर्गत विद्यावाचस्पति (पीएचडी) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

“बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ”

शोधार्थी :-

चंद्रप्रभा शर्मा

रजि.न.JVR-I/21/5806

.

शोध- निर्देशक :-

डॉ. चित्रा

एमए (हिंदी),पीएचडी

एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी,

शिक्षा और पद्धति संकाय

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय जयपुर (राजस्थान)

2021

अनुसन्धान रूपरेखा

‘पद्मजा शर्मा और प्रभा खेतान के साहित्य में नारी भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन’

अनुक्रमणिका

- प्रस्तावना
- प्रभा खेतान : एक परिचय
- प्रभा द्वारा रचित काव्य संसार
- पद्मजा शर्मा का परिचय
- कविता संग्रह
  - शब्दचित्र संग्रह
- साहित्य विवेचना
  - प्रभा खेतान जी से संबंधित शोध विवेचना
  - पद्मजा शर्मा जी से संबंधित शोध विवेचना
- शोध का औचित्य
- शोध के उद्देश्य
- शोध परिकल्पनाऐं
- शोध विधि
- अध्याय विन्यास

संदर्भ ग्रंथ सूची

प्रस्तावना

भारतीय समाज मे बहुत समय से स्त्री चिंतन का विषय रही है। भारत में स्त्री की देवी के रूप में पूजा भी होती है तो दूसरी ओर उसे उपभोग की वस्तु भी माना जाता रहा है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक स्त्री की परिस्थितियों में परिवर्तन होता रहा है। स्त्री हिंदी साहित्य का केन्द्र भी रही है। वैदिक और उत्तर वैदिक काल के समय से ही रामायण और महाभारत की रचनाओ ं का केन्द्र भी स्त्री रही है। कई भारतीय साहित्यकारो ं ने स्त्री जीवन को चित्रित किया है।

अब्दुल रहमान का 'संदेश रासक', विद्यापति की 'पदावली', खुसरो ं की पहेलियो ं में स्त्री के कोमल एवं मधुर भावनाओं का वर्णन है। नाथ साहित्यकारो ं का मानना था कि स्त्री द्वारा साधना में भंग उत्पन्न करने वाली माना था इसलिए नाथ साहित्य में स्त्री से दूर रहने का संदेश दिया गया है। संत काव्य में कबीरदास जी ने स्त्री को कामिनी रूप जैसे शब्दों के साथ चित्रित किया है इसके साथ ही उसे पतिव्रता होने का समर्थन भी किया है।
तुलसीदास जी ने लिखा है

अवगुन मूल सू लप्रद, प्रमदा सब दुख खानि। अर्थात् नारी अवगुणा की जड और दुखां` की खान है।

सहज अपावनि नारि, पति सेवत सुभ गति लहे। अर्थात् नारी को पवित्र होने के लिए पति की सेवा करनी चाहिए।

कबीर ने स्त्री को ईश्वर मिलन में सबसे बडी बाधा बताया है। उन्होंने लिखा है कि

नारी नसाबै नीति सुख, जा नर पासे होई।
भगति मुकति निज ग्यान में, पैसि न सकई कोई।।

रीति काल मे ं भी नारी का नखशिख वर्णन, उसके सौन्दर्य का वर्णन करने में ही तत्कालीन कवियों ने धन्यता मानी है।

आधुनिक युग मे ं मैथिलीशरण गुप्त ने स्त्रियो ं के अधिकार की गुहार लगाई है। 'रामकथा' को नए सिरे से रचते हुए 'साकेत' महाकाव्य में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला को नायिका बताया है वहीं केकैयी को भी क्षमा की पात्र बताया है। उनके अनुसार

अबला जीवन हाय तुम्हारी यह कहानी
आंचल मे ं दूध और आंखो ं मे ं पानी

जयशंकर प्रसाद ने 'कामायनी' में नारी को श्रद्धा का रूप बताया है। उनके अनुसार

नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास जगत नगपग तल में।
पियुष स्त्रोत सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में ।।

प्रेमचंद ने 'गोदान' में धनिया के माध्यम से भारत की समस्त महिलाओं की स्थिति को चित्रित किया है। 'कफन' कहानी के आरंभ में भी स्त्री के जीवन और उसके साथी की मौत को गंभीरता से नहीं बल्कि विनोद दृष्टि से रचा है। इस कहानी के माध्यम से प्रेमचंद पुरूषत्ववादी संस्कृति की नींव को हिला देते है।

इनके उपरांत इंशाल्लाहखान की 'रानी केतकी की कहानी', शिवप्रसाद की 'राजाभोज का सपना' किशोरी लाल की 'इंदुमती' के माध्यम से नारी का चित्रण किया है। कमलेश्वर की 'राजा निरबंसिया' कहानी में मध्यमवर्गीय स्त्री का चित्रण है। 'दिल्ली में एक मौत' में आधुनिक महानगरीय स्त्री का चित्रण है। निर्मल वर्मा की 'परिंदे' में और प्रियवंदा की 'वापसी' में भी स्त्री चिंतन दिखाई देता है। वापसी कहानी में गजाधर बाबू की पत्नी को पति और बच्चों के मध्य पारिवारिक विवशताओं में फंसी हुई स्त्री का चित्रण किया है।

कई महिला कहानीकारों जैसे सुभ्रदा कुमारी चौहान, उषादेवी, रजनी पन्नीकर, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, दीप्ती खंडेलवाल, प्रियवंदा, दिनेशनंदिनी, मालती जोश, शशि प्रभा आदि ने नारी चित्रण किया है।

इनके उपन्यासों में नारी के सामाजिक जीवन के साथ उनके जीवन की समस्याओं को उजागर किया है। इसमें सामाजिक बंधनों और उनके अंतर्मन के विचारों को स्थान दिया है।
नारी चिंतन के क्षेत्र में प्रभा खेतान ने जो साहित्य प्रस्तुत किया है उसका नारी चेतना की दृष्टि से आलोचनात्मक अध्ययन नहीं हो पाया है। इसी अभाव को देखकर प्रभा खेतान के साहित्य में नारी चेतना विषय को अपने शोध का आधार बनाया है।

प्रभा खेतान : एक परिचय

प्रभा खेतान का परिवार संकीर्ण विचारधारा वाला हिन्दू परिवार था। सन् 1942 में जब प्रभा का जन्म हुआ, यह समय महात्मा गाँधी के राष्ट्रीय नेतृत्व में स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष का समय था। महात्मा गाँधी का प्रभाव उस समय समाज के सभी वर्गो पर था। खेतान परिवार भी गाँधी जी के विचारों से प्रभावित था। प्रभा के पिताजी पूर्णतया गाँधीवादी ही थे।

प्रभा ने स्कूली शिक्षा के दौरान ही कविताऐं लिखनी शुरू कर दी थी। उनकी प्रथम कविता ''दैनिक सुप्रभात'' में छपी, तब से वे लगातार लिखती रही। बचपन से असमानताओं को देखती, महसूस करती आई, प्रभा ने जब समग्र समाज की तरफ देखा तो वहां नारी का स्थान दोयम दर्जे का नजर आया। बड़े घरों में नारी घर की चारदीवारी में कैद थी जबकि दूसरी ओर मजदूर वर्ग की नारी पूरे दिन पुरूषों के बराबर कार्य करके भी आधी मजदूरी की हकदार मानी जाती थी। प्रभा द्वारा रचा जाने वाला साहित्य नारी केन्द्रित रहा।

प्रभा ने केवल भारत में ही नारी की इस स्थिति को नहीं देखा बल्कि विदेशों में भी गई और वहां की नारी के दुःख व तकलीफों को भी गहराई से महसूस किया। प्रभा नारी की बाह्य स्वतन्त्रता की बजाय आंतरिक स्वतन्त्रता को प्राथमिकता देती है। नारी पहनावे से और घर की चारदीवारी से बाहर निकलने मात्र से स्वतन्त्र नहीं हो जाती। उसे अपनी मानसिकता को स्वतन्त्र करना होगा। साड़ी में भी नारी स्वतन्त्र हो सकती और जींस में भी मानसिकता से गुलाम।

नारीवाद के प्रति बने इन सभी भ्रमों, पूर्वाग्रहों और दुराग्रहों को प्रभा अपनी 'उपनिवेश में स्त्री' मुक्ति कामना की दस वार्ताएं पुस्तक के माध्यम से विस्तृत और स्पष्ट तरीके से दूर करने का प्रयास करती है। यह पुस्तक सन् 2003 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुई। स्त्री और उपनिवेशवादी व्यवस्था को एक साथ दर्शाती, प्रभा अपने विषय को दस अध्यायों में बांटकर भारतीय नारीवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट करती है।

बाजार के बीच, बाजार के खिलाफ : भूमण्डलीकरण के स्त्री प्रश्न : प्रभा की यह पुस्तक 6 अध्यायों में बंटी है। सन् 2004 में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित इस कृति में प्रभा की बौद्धिक परिपक्वता और विश्लेषण क्षमता प्रत्यक्ष रूप में देखी जा सकती है।

आओं पेपे घर चले : अपने परिवेश की सीमाओं से उपर उठकर विदेशी धरा पर लिखा गया ''आओं पेपे घर चले'' न केवल प्रभा का प्रथम उपन्यास है बल्कि हिन्दी साहित्य में भी विश्व की स्त्री का सच बयान करता, यह उपन्यास पहला ही जान पड़ता है।

छिन्नमस्ता : प्रभा का तीसरा एवं सर्वाधिक चर्चित उपन्यास छिन्नमस्ता स्त्री के सामर्थ्य एवं उत्पीड़न की कहानी कहता हुआ लगता है। यह उपन्यास सन् 1993 में राजकमल प्रकाशन

नई दिल्ली से प्रकाशित है। इस उपन्यास की नायिका प्रिया की शादी से पहले की कहानी प्रभा की स्वयं की कहानी लगती है।

पीली आँधी : पीली आंधी उपन्यास भी मारवाड़ी समाज के अनछुए पहलुओं को समाज के सामने रखता है। सन् 2001 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ और बाद में के.के. फाउण्डेशन के बिहारी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इस उपन्यास में स्त्री अपने परिवार के संस्कारों के नीचे दबती–पिसती, अपने दुःख को जाहिर न करते हुए अपनी जिम्मेदारियां निभाती चली जाती है और अन्त में नारी सुलभ व्यवहार के कारण घर त्याग कर गई बहू को वापिस बुलाती है, उसी के हाथों से अंतिम बार पानी की बूंद ग्रहण करती है।
अपने–अपने चेहरे : सन् 1996 में किताब घर नई दिल्ली से प्रकाशित प्रभा का यह उपन्यास जमीन तलाशती स्त्री की कहानी है। अन्य रचनाओं की भांति इस उपन्यास में भी लेखिका के जीवन की घटनाओं के अंश मौजूद है।

स्त्री पक्ष : यह प्रभा का अन्तिम और विचारों की उथल–पुथल वाला उपन्यास है। यह 1999 में 'जनसता सबरंग' में क्रमशः छपा। इस उपन्यास की विषय वस्तु प्रभा के अन्य उपन्यासों से हटकर उच्चवर्गीय नारी की अपेक्षा मध्यमवर्गीय नारी के इर्द–गिर्द घूमती है।

प्रभा द्वारा रचित काव्य संसार

अपरिचित उजाले : यह प्रभा के भावों को पूर्णाभिव्यक्ति देता हुआ प्रथम काव्य संग्रह है। सन् 1981 में अक्षर प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुए इस संग्रह में कुल 64 कविताऐं है जिनका मूल प्रेम है। कवयित्री कभी प्यार की सफलता का उल्लास तो कभी प्यार की असफलता का गहरा दर्द व्यक्त करती है। वह कहती है कि प्यार का मार्ग बड़ा ही कठिनाईयों भरा है फिर भी नारी को आकर्षित करता है, तभी तो उसके भीतर की मासूम लड़की बाहर निकलकर प्यार की दुनियां में अपने–आप को भुला देती है।

हुस्नबानों और अन्य कवितायें : समाज में फैली विभिन्न समस्याओं की अपने–आप में समेटे प्रभा का यह कविता संग्रह विविधता लिए हुए है। सन् 1987 में स्वर समवेत, प्रकाश कलकता से प्रकाशित हुआ। गरीबी, भूख, आंतकवाद आदि विभिन्न विषयो ं को इसमें समावेशित किया गया है।

अहल्या : जिस प्रकार प्रभा ने ''कृष्णधर्मा मैं'' में कृष्ण का मिथक रचा उसी प्रकार 'अहल्या' में गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या का मिथक रच कर लिखा गया कविता संग्रह सन् 1988 में सरस्वती विहार, दिल्ली से प्रकाशित हुआ। यह कविता संग्रह प्रभा की बौद्धिकता और संवेदशीलता को एक साथ दर्शाता है। वहीं नारी जागृति के पक्षकारों में प्रभा को महत्वपूर्ण स्थान पर भी स्थापित करता है।

इसी प्रकार वर्तमान में पद्मजा शर्मा जी ने भी अपनी कृतियों में नारी चित्रण किया है।

पद्मजा शर्मा का परिचय

पद्मजा शर्मा का जन्म झुंझुनूं जिले के छोटे से गाँव बिरमी, राजस्थान में 5 मार्च 1962 को हुआ, एक लेखिका है। आपकी माता रामेश्वरी देवी और पिता पंडित श्री श्रीधर शास्त्री स्त्री शिक्षा के हिमायती थे। गाँव में पाँचवी तक की शिक्षा के बाद आपने पिलानी के पास बगड़ हॉस्टल में रहकर ग्यारहवीं तक की शिक्षा अर्जित की। आप तीन विषयों–हिन्दी, इतिहास, पत्रकारिता – में एम ए,हिन्दी में एम फिल,दो विषयों में पीएच डी हैं। आपने हिन्दी साहित्य में आचार्य चतुरसेन शास्त्री के उपन्यासों पर शोध किया और पत्रकारिता में हिन्दी विज्ञापनों में स्त्री विषय पर भी शोधकार्य किया।ख्1, आपने एस एन डी टी महिला विश्वविध्यालय की बी एम रूईया कॉलेज, बॉम्बे यूनिवर्सिटी तथा जे एन वी यू से स्वर्ण पदकों सहित उच्च शिक्षा प्राप्त की। पद्मजा शर्मा का कविता साहित्य में एक चर्चित नाम ळें

कविता संग्रह

इस जीवन के लिए (2000)
सदी के पार (2011)
हारूंगी तो नहीं (2013)
मैं बोलूंगी (2014)
पहाड़ नदी फूल और प्रेम (2014)
खामोशी (2016)
जिंदगी को मैंने थामा बहुत (2016)
21 श्रेष्ठ कहानियां (2009)
एक औरत तीन बटा चार (2011)

शब्दचित्र संग्रह

इस दुनिया के अगल बगल(1999)
इस दुनिया के अगल बगल(1999)
रमता जोगी बहता पानी (2005)
नासिर के तीन सपने (2006)
हंसो ना तारा (2016)
घर से दूर घर के लिए(2017)
समय से संवाद (2014)
रूबरू (2011)
बेटी व अन्य लघु कथाएँ (2016)
गाँव जाग गया (मार्च 2017)
मोबाइल पिक और हॉस्टल तथा अन्य कहानियाँ (2019)
वक्त भी हैरान रह जाए तथा अन्य कहानियाँ (2019)
विश्वास का घर (2020)

साहित्य विवेचना

प्रभा खेतान जी से संबंधित शोध विवेचना

समाज के लोगों में ही नहीं, साहित्य की तमाम विधाओं में भी नारी चेतना की लहरें दिखाई देती है। हिन्दी साहित्य क्षेत्र में 1975 के बाद इसकी शुरूआत हुई।

"साहित्य में स्त्री–विमर्श का सबसे पहला कार्य स्त्री की चेतना का विकास है। लिंग की अवधारणा इतिहास की दृष्टि से सबसे अधिक बीसवीं शताब्दी में उभरी है।"
स्वतन्त्रता के बाद कई ऐसी लेखिकाऐं हमारे सामने मौजूद रहीं, जिन्होंने स्त्री जीवन के विभिन्न पहलुओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया। समाज में नारी का शोषण जहाँ भी हो रहा है उसके खिलाफ आवाज उठाने का काम इन महिला लेखिकाओं ने किया। कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, महादेवी वर्मा, मन्नू भण्डारी आदि की रचनाओं में नारी पात्र सशक्त दिखाई पड़ते है।

प्रभा खेतान के साहित्य में नारी का पारिवारिक एवं सामाजिक रूप मिलता हैं। प्रभा जी के साहित्य में नारी आरम्भ में शोषित दिखाई देती है परन्तु धीरे–धीरे वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती है तथा समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाती है।
प्रभा खेतान ने जो भी साहित्य रचा हैं उसमें 1960 से पहले के सभी नारी पात्र आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं है। पहले हमारे समाज का ढांचा ही ऐसा था कि महिलाऐं घर–परिवार व बच्चों तक ही सीमित रहती थी।

प्रभा के साहित्य में रमा, प्रिया, पदमावती, सोमा, आइलिन आदि स्त्री पात्र आत्मनिर्भर है तथा संघर्ष करते हुए दिखाई देते हैं। वे कहीं भी कमजोर नहीं हैं और दूसरी स्त्रियों को भी सहारा देते हैं।

डॉ. नामावर सिंह ने दो प्रकार के साहित्यकारों का उल्लेख किया है – "कुछ साहित्यकार ऐसे हैं जो अपने मन की गांठें खोलते हैं। मन की एक–एक पर्त खोलकर रख देते हैं। चेतन की सतह के नीचे अवचेतन में पड़ी हुई बहुत सी बातों को खोलना ही उनके लिए सबसे बड़ा उद्घाटन कार्य हैं। दूसरी तरफ ऐसे भी लेखक है जो मन के माध्यम से उस मन के साथ जुड़े हुए लाखों दूसरे मतों का उद्घाटन करते हैं, इस तरह वे अपने मन के द्वंन्द्व का उद्घाटन करते–करते उस युग के पूरे समाज के संघर्ष को खोल कर रख देते हैं।" निश्चय ही प्रभाजी साहित्यकारों के दूसरे वर्ग में आती है।

प्रभा खेतान का साहित्य सम्पूर्ण नारी जगत में चेतना का संचार करता है। आज शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण नारी अपने अधिकारों के प्रति जाग्रत हुई है। महानगरीय क्षेत्रों में वह अधिक स्वतन्त्र होकर निर्णय ले रही है। आज महानगरों में नारी को शिक्षा तथा आगे बढ़ने के अवसर मिल रहे हैं। वह अपना अस्तित्व पहचानने लगी है।

पद्मजा शर्मा जी से संबंधित शोध विवेचना

डॉ पद्मजा शर्मा राजस्थान की चर्चित कवयित्रियों में शुमार हैं। आपकी कविता के लिए ख्यात कथा लेखिका चित्र मुगदल कहती हैं पद्मजा की कविताएं गहरी और सूक्ष्म समीक्षा की मांग करती हैं। इन कविताओं में पद्मजा स्त्री हक और उसकी आजादी की चौकीदार नजर आती हैं।

कथाकार सूर्यबाला कहती हैं पद्मजा की कविताओं की जादूगरी बेमिसाल है। यहाँ कविता निसर्ग धारा सी बहती है। जितना चाहो डूबो पर तृप्त न हो ओ। आपके शब्दचित्रों के विषय में आलोचक रेवतीरमण शर्मा कहते हैं इनमें वर्णित पीड़ा हमें भीतर तक छू जाती है।
कथाकार डॉ सत्यनारायण कहते हैं नामवरजी ने एक वक्तव्य में कहा था कि कवियों में भोलापन गायब होता जा रहा है। डॉ पद्मजा शर्मा की कविताओं में वह भोलापन है। और पद्मजा शर्मा के रेखाचित्रों का मूल स्वर जीवन ही है।

राजस्थानी के कवि,कथाकार आईदान सिंह भाटी हंसो ना तारा पुस्तक के विषय में लिखते हैं स्त्री जीवन की रेखाचित्रों की रामायण में अनेक कोणों पर आशा की चमचमाती किरणें हैं। लेखिका ने देशज और बिम्बात्मक शब्दों द्वारा करुणा का समंदर रचा है।
आलोचक डॉ रमाकांत शर्मा कहते हैं डॉ पद्मजा शर्मा की कविताएं खामोशी संग्रह की कविताओं के विशेष संदर्भ मेंसादगी, सहजता और संप्रेषणीयता के साथ आग, राग और रोशनी का रसायन रचती हैं।

जेन गुडाल ने कहा कि कम से कम जितना संभव हो हमें उन लोगों की तरफ से बोलना चाहिए जो अपने लिए नहीं बोल सकते। अपने कथाचित्रों में पद्मजा शर्मा ने उन्हीं अबोले लोगों को वाणी दी है।

शोध का औचित्य

वर्तमान समय में हिंदी साहित्य की विधाओं में परिवर्तन आ रहा है। इसमें पिछली पीढ़ी और वर्तमान पीढ़ी के साहित्यकारों के लेखन और सामाजिक चिंतन में भी परिवर्तन आ रहा है। ऐसे में नारी चिंतन और नारीवादी दृष्टिकोण पर बहुत सा साहित्य सभी भाषाओं में उपलब्ध है। वर्तमान में नारी की समस्याऐं और उसके लिए सामाजिक दृष्टिकोणों में भी परिवर्तन आ रहा है और यही परिवर्तन साहित्य के क्षेत्र में भी नारी चिंतकों के लेखन में दिखाई दे रहा है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से हिंदी साहित्य में नारी चिंतन में आ रहे इन्हीं साहित्यिक परिवर्तनों को जाना जाएगा। इसके साथ ही शोध के माध्यम से साहित्य में नारीवादी दृष्टिकोण में हो रहे वैचारिक और साहित्यिक अंतरों को भी जाना जा सकेगा। इससे दो भिन्न पीढ़ियों के साहित्यकारों की विधाओं के अंतर को जानने में सहायता प्राप्त होगी और साहित्यकारों की तुलनात्मकता से साहित्य के क्षेत्र में हो रहे विकास को जानने में भी सहायता प्राप्त होगी।

शोध के उद्देश्य

1. प्रभा खेतान के साहित्य में नारी की भूमिकाओं का विश्लेषण करना।
2. पद्मजा शर्मा के साहित्य मे नारी की भूमिकाओं का विश्लेषण करना।
3. प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में नारी के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा अन्य क्षेत्रों में नारी भूमिकाओं की तुलना करना।
4. प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में ग्रामीण, शहरी, विदेश प्रवासी, महानगरीय, अमीर, गरीब आदि क्षेत्र में नारी की भूमिकाओं की तुलना करना।
5. प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में प्रेम, विरह, अकेलापन, त्याग, संघर्ष, शोषण तथा अन्य भावनाओं के संदर्भ में नारी की भूमिकाओं की तुलना करना।
6. हिंदी साहित्य क्षेत्र में प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में नारी की भूमिकाओं में आए परिवर्तन की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाऐं

1. हिंदी साहित्य में नारी के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भूमिकाओं के लेखन में प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में सहसंबंध है।
2. हिंदी साहित्य में नारी की भावनाओं को व्यक्त करने में प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में सहसंबंध है।
3. हिंदी साहित्य में विभिन्न क्षेत्रों की नारियों की भूमिकाओं को व्यक्त करने में प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में सहसंबंध है।
4. हिंदी साहित्य में नारी भूमिकाओं को व्यक्त करने की शैली में कोई परिवर्तन नहीं आया है।
5. हिंदी साहित्य में नारी भूमिकाओं को व्यक्त करने वाली प्रभा शर्मा और पद्मजा शर्मा के विचारों, लेखन शैली, भूमिका प्रस्तुतीकरण आदि में सार्थक अंतर है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध जीवित व्यक्तित्वों पर आधारित है। अतः शोध में चयनित दोनों लेखिकाओं से साक्षात्कार विधि द्वारा प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया जाएगा। इसके साथ ही साहित्य के क्षेत्र में अन्य नारीवादी लेखकों और चिंतकों से भी साक्षात्कार द्वारा प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया जाएगा।
प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा की कृतियों का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए शोध निष्कर्षों तक पहुंचा जाएगा।

अध्याय विन्यास

- **प्रथम** अध्याय **:-** प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा का साहित्य क्षेत्र में योगदान
- **द्वितीय** अध्याय **:-** प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में नारी की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक भूमिका
- **तृतीया** अध्याय **:-** प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में ग्रामीण, नगरीय और महानगरीय क्षेत्र में नारी चिंतन की तुलना
- **चतुर्थ** अध्याय **:-** प्रभा खेतान और पद्मजा शर्मा के साहित्य में विभिन्न भावनाओं के संदर्भ में नारी भूमिकाओं की तुलना
- उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. दी पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, ए.एस. अल्टेकर।
2. यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, साहित्य सदन, झाँसी, 2008 ।
3 यूएन वुमेन : प्रोगेस ऑफ द वर्ल्ड वुमेन इन परस्यूट ऑफ जस्टिस
4. ऋग्वेद 10, 85–48
5. भारतीय नारी : दशा और दिशा, आशा रानी ब्होरा, नेशनल पब्लिशर्स
6. कबीर ग्रन्थावली, पारसनाथ तिवारी, हिन्दी साहित्य परिषद्
7. महाभारत, बॉम्बे भारतीय विद्या भवन, 1966
8. श्रृखंला की कड़ियां, महादेवी वर्मा, लोक भारती प्रकाशन, 2008
9. समस्या मूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द, महेन्द्र भटनागर
10. स्त्री पुरुष सम्बन्धों का रोमांचकारी इतिहास, मन्मंथनाथ गुप्त, वाणी प्रकाशन, 2008
11. मनु स्मृति, 9/18
12. भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में नारी, नीता रत्नेश
13. प्रभा खेतान का उपन्यासिक संसार, डॉ0 ऊषा कीर्ति राणावत
14. हमारी परम्परा, प्रो. हुमायू कबीर, एशिया पब्लिकेशन, 1962
15. आधुनिक समाज एवं महिलाएं, रागिनी श्रीवास्तव
16. आदमी की निगाह में औरत, राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, 2007
17. हिन्दी उपन्यासों में समाजशास्त्रीय विवेचना, डॉ. चण्डी प्रसाद, इन्टर पब्लिशिंग ग्रुप, 1974
18. भगवती चरणवर्मा के उपन्यासों में नारी, डॉ. नीतारत्नेश
19. इतिहास और आलोचना, डॉ. नामावर सिंह, राजकमल प्रकाशन, 2009
20. नारी मुक्ति का संघर्ष, डॉ. अमरनाथ, हिन्दी बुक सेन्टर
21. पंत काव्य में समाज एवं संस्कृति, डॉ. गीता दुबे
22. नारी अस्मिता हिन्दी उपन्यासों में, डॉ. सुदेश बत्रा, पब्लिशिंग हाऊस
23. सैक्स और जंगली समाज, मैलिनोवस्की, रूटोज पब्लिशर्स, 2001
24. स्त्रियों की पराधीनता, जान स्टुअर्ट मिल
25. नारी शोषण : आईने और आयाम, आशा रानी ब्होरा, शारदा पब्लिकेशन्स, 2008
26. वुमेन एण्ड सोशल जस्टिस, गाँधीजी, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, 1954
27. स्त्रियाँ और उनकी समस्याएं, गाँधीजी, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, 1945
28. सामाजिक नृ–विज्ञान की भूमिका, लूसी मेयर, मोलिनो पब्लिशर्स, 2008